Annexure-C-2-(2.11.2)

Capacity Building of Students:

ii) language cum- Graduate attributes Development Programs- ***two programs related to activity***

घुमारवीं में इंगलिश एम्पलाईबिलिटी एंटरप्रेन्योरशिप का प्रशिक्षण कोर्स संपन्न

प्रशिक्षुओं को वितरित किए प्रमाण पत्र

घुमारवीं, 31 अगस्त (केशव): स्वामी विवेकानंद राजकीय महाविद्यालय घुमारवीं में इंगलिश एम्पलाईबिलिटी और एंटरप्रेन्योरशिप का प्रशिक्षण कोर्स पूरा होने पर प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरण समारोह आयोजित किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. रामकृष्ण ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इस कोर्स का संचालन स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण एवं महिला विकास समिति द्वारा हिमाचल प्रदेश कौशल विकास निगम के तत्वावधान में किया गया।

प्राचार्य ने प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित करने के बाद कहा कि यह कोर्स हिमाचल प्रदेश विकास कौशल विकास निगम द्वारा नि:शुल्क था तथा इसकी अवधि 6 महीने की थी। उन्होंने कहा कि युवाओं को सरकार द्वारा संचालित नि:शुल्क ऐसी योजनाओं का लाभ प्राप्त कर रोजगार के अवसर सृजित करने चाहिए। उन्होंने इस दिशा में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर इंगलिश एम्पलाईबिलिटी और एंटरप्रेन्योरशिप तथा करियर काउंसलिंग और गाइडैंस सैल के संयोजक प्रो. सीताराम तथा स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण तथा महिला विकास समिति के प्रशिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

घुमारवीं कालेज मे सृजनात्मक लेखन पर कार्यशाला का आयोजन

कश्मीर ठाकुर। बिलासपुर

स्वामी विवेकानंद राजकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय घुमारवीं में आज अंग्रेजी विभाग एवं पूर्व छात्र विकास परिषद द्वारा सृजनात्मक लेखन विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में राजकीय महाविद्यालय बिलासपुर से स्रोत व्यक्ति एवं आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. नम्रता पठानिया ने शिरकत की। डॉ. नम्रता पठानिया ने अपने संबोधन में कहा कि सृजनात्मक लेखन में लेखक अपनी कल्पना का इस्तेमाल करता है और भाव विह्वल होकर प्रेम, पवित्रता, पलायन, ईश्वर, नश्वरता जैसे विषयों पर अपने विचार व्यक्त करता है। व्यक्ति अपने मन, मस्तिष्क और बौद्धिक ज्ञान के हिसाब से रचना करता है। उन्होंने बताया कि सृजनात्मक लेखन एक जैविक प्रक्रिया है और इसमें दोहराव नहीं होता। सृजनात्मक लेखन के अंतर्गत कई विधाएं आती हैं जैसे कहानी, कविता, गीत उपन्यास, नाटक, निबंध, पत्र लेखन, डायरी लेखन आदि। उन्होंने अंत में कहा कि सृजनात्मक लेखन का उद्देश्य मानवीय मूल्यों का प्रचार.प्रसार करनाएभावनाओं को जगाना और जीवन की सार्थकता को समझाना होता है। इस कार्यशाला के अंतर्गत विद्यार्थियों द्वारा कविताएं, कहानी आदि की रचनाएं भी की गई। जिसमें पायल, आरती, रोहिणी, कनिका, प्रोमिल आदि की रचनाएं सराहनीय रही। इस कार्यशाला में अंग्रेजी स्नातकोत्तर की छात्रा रोहिणी द्वारा मंच संचालन किया गया।